International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 3 Issue 5, August 2019 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

संगीत में गुरुकुल शिक्षा परंपरा को बनाए रखने में चुनौतियाँ और अवसर

Dr. Kavita Bhatnagar

Assistant Professor, Music, Swami Shukdevanand College, Shahjahanpur, Uttar Pradesh, India

सार

भारत में संगीत शिक्षा, एक समृद्ध संगीत विरासत वाला देश, आधुनिक दुनिया की मांगों के साथ पारंपरिक प्रथाओं को संतुलित करते हुए एक चौराहे पर है। यह ब्लॉग भारत में संगीत शिक्षा की वर्तमान स्थिति का पता लगाता है, अंतराल, चुनौतियों और विकसित परिदृश्य पर प्रकाश डालता है, और उन चुनौतियों का निष्कर्ष निकालता है जिन पर भारतीय संस्थानों ने संगीत शिक्षा में काबू पा लिया है।

How to cite this paper: Dr. Kavita Bhatnagar "Challenges and Opportunities in Maintaining the Gurukul Education Tradition in Music" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-3 | Issue-5, August 2019, pp.2740-2744, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd26793.pdf

IJTSRD26793

Copyright © 2019 by author(s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

IJTSRD International Journal of Trend in Scientific Research and Development

परिचय

भारत में संगीत शिक्षा की जड़ें प्राचीन परंपराओं में हैं, जो अक्सर परिवारों या गुरुकुलों में पीढ़ियों से चली आ रही हैं, जहां गुरु-शिष्य (शिक्षक-छात्र) परंपरा प्रचलित थी। समय के साथ, यह प्रणाली विकसित हुई है, जिसमें शिक्षा के अधिक संरचित और औपचारिक तरीकों को एकीकृत किया गया है। यह परिवर्तन पूरी तरह से पारंपरिक तरीकों से एक मिश्रण में बदलाव का प्रतीक है जिसमें समकालीन शैलियों और वैश्विक प्रभाव शामिल हैं।

भारत में संगीत शिक्षा का वर्तमान उद्देश्य

भारत में, संगीत शिक्षा वर्तमान में पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण का मिश्रण प्रदर्शित करती है। जबकि पारंपरिक गुरुकुल-शैली की शिक्षा जारी है, औपचारिक शिक्षा पर जोर बढ़ रहा है। इन संस्थानों के पाठ्यक्रम में अक्सर वैश्विक संगीत शिक्षा निकायों द्वारा मान्यता प्राप्त डिप्लोमा और डिग्री शामिल होते हैं, जो स्थानीय और वैश्विक संगीत शिक्षा प्रवृत्तियों के मिश्रण को दर्शाते हैं।

वैश्विक रुझानों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण

भारतीय संगीत शिक्षा की वैश्विक रुझानों से तुलना करने पर सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल का एक अनूठा मिश्रण सामने आता है। जबकि पश्चिमी संगीत शिक्षा अक्सर औपचारिक प्रशिक्षण और प्रमाणन पर जोर देती है, भारतीय संगीत शिक्षा पारंपरिक रूप से अनुभवात्मक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करती है। यह अंतर चुनौतियां और अवसर दोनों प्रस्तुत करता है क्योंकि भारतीय संगीत शिक्षा दोनों दुनिया के सर्वश्रेष्ठ को एकीकृत करने का काम करती है।

आधुनिक संगीत शिक्षा में चुनौतियाँ

भारत में संगीत शिक्षा को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

- संसाधन की कमी: कई स्कूल सीमित संसाधनों से जूझते हैं, जिससे संगीत शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इसमें संगीत वाद्ययंत्रों, उपयुक्त सुविधाओं और प्रशिक्षित संगीत शिक्षकों की कमी शामिल है।
- पाठ्यचर्या की सीमाएँ: कई स्कूलों में संगीत शिक्षा के लिए एक मानकीकृत, व्यापक पाठ्यक्रम की अनुपस्थिति के कारण सीखने का अनुभव असंगत हो जाता है।
- डिजिटल विभाजन: जबकि डिजिटल क्रांति ने संगीत शिक्षा को और अधिक सुलभ बना दिया है, उन लोगों और जिनके पास इन संसाधनों तक पहुंच नहीं है, उनके बीच एक अंतर बना हुआ है।
- संगीत शिक्षकों के लिए मानकीकृत प्रमाणन का अभाव: भारत की संगीत शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण चुनौती संगीत शिक्षकों के लिए मानकीकृत प्रमाणन प्रक्रिया का अभाव है, जिससे शिक्षकों की योग्यता और कौशल स्तरों का आकलन करने में कठिनाई के कारण संगीत शिक्षा में असंगत गुणवत्ता आती है।

सफलता की कहानियाँ और उल्लेखनीय पूर्व छात्र

भारत में अपना बुनियादी प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले कई भारतीय संगीतकारों ने भारतीय संगीत शिक्षा प्रणाली की प्रभावशीलता का प्रदर्शन करते हुए अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। उनकी सफलता की कहानियाँ विभिन्न भारतीय संगीत संस्थानों द्वारा प्रदान किए गए प्रशिक्षण की गुणवत्ता का प्रमाण हैं।

भारत में संगीत शिक्षा में भविष्य के रुझान

भविष्य की ओर देखते हुए, भारत में संगीत शिक्षा प्रौद्योगिकी और नवाचार को अधिक गतिशील रूप से अपनाने के लिए तैयार है।

उभरते रुझानों में प्रदर्शन में आभासी वास्तविकता का एकीकरण शामिल है, जो छात्रों और शिक्षकों को संगीत सीखने और अनुभव करने का अधिक गहन और इंटरैक्टिव तरीका प्रदान करता है। इंटरएक्टिव ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं, जो संगीतकारों के वैश्विक समुदाय तक पहुंच और सीखने और सहयोग के लिए संसाधनों का खजाना प्रदान करते हैं।

संगीत शिक्षा में इन उभरते रुझानों के बीच, पाटूक्लास भारत में ई-लर्निंग पाठ्यक्रम के रूप में लगातार प्रगति कर रहा है। यह एक ऐसा स्थान है जहां शिक्षार्थी प्रौद्योगिकी के माध्यम से संगीत का पता लगा सकते हैं और संगीत प्रेमियों के व्यापक समुदाय से जुड़ सकते हैं। संगीत सीखने के भविष्य को अपनाते हुए, पाटूक्लास उन सभी के लिए सुलभ और आकर्षक संसाधन प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है जो संगीत की दुनिया में जाना चाहते हैं।

संगीत में ए.आई

संगीत रचना में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग अब केवल एक भविष्य की अवधारणा नहीं है; यह एक वर्तमान वास्तविकता है जो संगीत शिक्षा में गति पकड़ रही है। एआई छात्रों को पारंपरिक रचना की सीमाओं को आगे बढ़ाते हुए उन्नत तकनीक के साथ संगीत का पता लगाने और बनाने में सक्षम बनाता है। एआई का यह उपयोग न केवल संरचना प्रक्रिया में क्रांतिकारी बदलाव लाता है, बल्कि छात्रों को नवीन उद्योग प्रथाओं के लिए भी तैयार करता है। एआई कैसे संगीत को बदल रहा है, इसकी गहराई से जानकारी के लिए, संगीत में एआई पर हमारे आगामी ब्लॉग के लिए बने रहें।

संगीत में डेटा एनालिटिक्स

एआई के साथ-साथ, संगीत शिक्षा के भविष्य को आकार देने वाला एक और महत्वपूर्ण रुझान डेटा एनालिटिक्स का अनुप्रयोग है। डेटा के माध्यम से संगीत की प्राथमिकताओं और रुझानों को समझना केवल संगीत उत्पादन को सूचित नहीं करता है; यह संगीत विपणन में भी एक महत्वपूर्ण उपकरण बनता जा रहा है। छात्रों को डेटा एनालिटिक्स कौशल से लैस करके, संगीत शिक्षा मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है, जो उन्हें संगीत उद्योग के भीतर विभिन्न कैरियर पथों के लिए तैयार कर सकती है। यह दृष्टिकोण संगीत और उसके दर्शकों की अधिक डेटा-संचालित समझ की ओर वर्तमान उद्योग के बदलाव के साथ संरेखित है।

प्रौद्योगिकी में ये प्रगति न केवल सीखने के अनुभव में नए आयाम जोड़ रही है; वे छात्रों के लिए पारंपरिक भूमिकाओं से परे, संगीत उद्योग में विभिन्न प्रकार के करियर पथ तलाशने का मार्ग भी प्रशस्त कर रहे हैं। संगीत निर्माता और साउंड इंजीनियर बनने से लेकर संगीत प्रौद्योगिकी और डिजिटल मार्केटिंग में भूमिका निभाने तक, भारत में संगीत के छात्रों के लिए वैश्विक उद्योग मानकों के साथ तालमेल बिठाने का दायरा तेजी से बढ़ रहा है।

संगीत शिक्षा में भारत ने चुनौतियों पर काबू पाया

पिछले कुछ वर्षों में, भारत को संगीत शिक्षा में संसाधन की कमी और पाठ्यक्रम की सीमाओं जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। हालाँकि, प्रगति हुई है, अधिक स्कूलों ने संगीत को अध्ययन के विषय के रूप में शामिल किया है और इसके संज्ञानात्मक और भावनात्मक लाभों को स्वीकार किया है। इन सुधारों के बावजूद, डिजिटल विभाजन और अधिक मानकीकृत पाठ्यक्रम की आवश्यकता जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जो भारत में संगीत शिक्षा को उन्नत करने के लिए चल रहे प्रयासों का संकेत देती हैं।

भारत में संगीत शिक्षा परिदृश्य तेजी से विकसित हो रहा है, चुनौतियों का सामना कर रहा है लेकिन अवसरों को भी स्वीकार कर रहा है। समृद्ध इतिहास और संभावनाओं से भरे भविष्य के साथ, भारतीय संगीत शिक्षा वैश्विक संगीत परिदृश्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान जारी रखने के लिए तैयार है। जैसे-जैसे भारतीय शैक्षणिक संस्थान बदलते समय और प्रौद्योगिकियों के अनुकूल हो रहे हैं, वे यह सुनिश्चित करते हैं कि भारतीय संगीत की विरासत और समृद्धि बढ़ती रहे और भावी पीढ़ियों के साथ गूंजती रहे।

विचार-विमर्श

भोपाल के प्रतिष्ठित ध्रुपद संस्थान से जुड़े प्रसिद्ध ध्रुपद संगीतकार रमाकान्त और अखिलेश गुंदेजा पर हाल ही में लगे यौन उत्पीड़न के आरोपों ने गुरु शिष्य परंपरा पर एक नई बहस को जन्म दिया है.

ध्रुपद संस्थान के वर्तमान और पूर्व छात्रों की ओर से, दो सितंबर को पहली बार सार्वजनिक तौर पर लगाए गए इन आरोपों की जाँच फ़िलहाल संस्थान द्वारा गठित एक इंटर्नल कम्प्लेंट कमेटी द्वारा की जा रही है. अपने आरोपों में कम से कम दस शिकायतकर्ता छात्राओं ने गुंदेजा बंधुओं पर अलग-अलग समय में यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया हैं, गुंदेजा परिवार ने सभी आरोपों का सिरे से खंडन किया है.

लेकिन इस घटना के बाद शास्त्रीय हिंदुस्तानी संगीत में सदियों से चली आ रही गुरु-शिष्य परंपरा के औचित्य पर संगीत की दुनिया में ही भीतर से सवाल उठने लगे हैं.

भोपाल स्थित ध्रुपद संस्थान में लम्बे समय तक ध्रुपद सीख चुके एक छात्र नाम न प्रकाशित करने की शर्त पर कहते हैं कि शास्त्रीय संगीत में गुरुओं की ईश्वरीय छवि उन्हें शिष्यों के ऊपर ताक़त प्रदान करती हैं.

भोपाल के प्रतिष्ठित ध्रुपद संस्थान से जुड़े प्रसिद्ध ध्रुपद संगीतकार रमाकान्त और अखिलेश गुंदेजा पर हाल ही में लगे यौन उत्पीड़न के आरोपों ने गुरु शिष्य परंपरा पर एक नई बहस को जन्म दिया है.

ध्रुपद संस्थान के वर्तमान और पूर्व छात्रों की ओर से, दो सितंबर को पहली बार सार्वजनिक तौर पर लगाए गए इन आरोपों की जाँच फ़िलहाल संस्थान द्वारा गठित एक इंटर्नल कम्प्लेंट कमेटी द्वारा की जा रही है. अपने आरोपों में कम से कम दस शिकायतकर्ता छात्राओं ने गुंदेजा बंधुओं पर अलग-अलग समय में यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया हैं, गुंदेजा परिवार ने सभी आरोपों का सिरे से खंडन किया है.

लेकिन इस घटना के बाद शास्त्रीय हिंदुस्तानी संगीत में सदियों से चली आ रही गुरु-शिष्य परंपरा के औचित्य पर संगीत की दुनिया में ही भीतर से सवाल उठने लगे हैं.

भोपाल स्थित ध्रुपद संस्थान में लम्बे समय तक ध्रुपद सीख चुके एक छात्र नाम न प्रकाशित करने की शर्त पर कहते हैं कि शास्त्रीय संगीत में गुरुओं की ईश्वरीय छवि उन्हें शिष्यों के ऊपर ताक़त प्रदान करती हैं.

लेकिन ध्रुपद के प्रतिष्ठित संगीतकार उदय भवलकर गुरु-शिष्य परंपरा को दोषमुक्त बताते हुए कहते हैं कि इस संस्कार के शीर्ष पर बैठे लोगों द्वारा अपनी जगह का दुरुपयोग किए जाने की वजह से पूरी परंपरा पर सवाल उठाना ग़लत है.

बीबीसी से बातचीत में वह जोड़ते हैं, "पीड़िताओं को न्याय मिलना ही चाहिए. लेकिन कुछ लोगों द्वारा शक्ति के दुरुपयोग की वजह से गुरु-शिष्य परंपरा पर सवाल उठाना ग़लत है. मैं ख़ुद इस संस्कार से आया हूँ और इसी में सिखाता हूँ. यह परंपरा संगीत सीखने के परे जाती एक ऐसी दृष्टि है जो कला को जीवन जीने के तरीक़े में तब्दील करने की शिक्षा देती है."

डागर घराने से आने वाले ध्रुपद संगीतकार वासिफ़ुद्दीन डागर भी गुरु शिष्य परंपरा का बचाव करते हुए कहते हैं कि इसमें सिर्फ़ बुराइयां ही नहीं हैं.

"डागर घराने में सभी शिष्यों को हमेशा सुरक्षा और सम्मान भी मिला है. जो बातें भोपाल के ध्रुपद संस्थान के बारे में सामने आ रही हैं वह दुखद हैं और मैं दुआ करता हूँ कि इस मामले में न्याय हो. लेकिन इसकी वजह से यह नहीं माना जाना चाहिए कि गुरु शिष्य परंपरा में सब कुछ बुरा और नकारात्मक ही है."

लेकिन छात्रों का मानना है कि ध्रुपद जैसी विधाओं में गुरु के हाथों में नए सीखने वालों को सिखाने के साथ साथ संगीत में उनके भविष्य को प्रभावित करने की भी ताक़त होती है.

दो साल से ध्रुपद सीख रहे एक छात्र ने बताया,"जो बात छात्रों को चुप रहने या किसी तरह के अन्याय के ख़िलाफ़ खुल कर आवाज़ उठाने से रोकती है वह है गुरुओं के हाथ में मौजूद ताक़त. उदाहरण के लिए ध्रुपद जैसी विधा में सवाई गंधर्व, डोवर लेन, शंकरलाल, हरिवल्लभ और सप्तक जैसे गिनती के राष्ट्रीय स्तर के प्रस्तुति समारोह या फ़ेस्टिवल होते हैं. सभी की इच्छा होती है कि इन कार्यक्रमों में प्रस्तुति देने का मौक़ा मिले. और यह सब आपके गुरु के हाथों में होता है. अगर उन्होंने सिर्फ़ फ़ोन उठाकर चार जगह कह दिया कि फ़लां गायक ठीक नहीं है तो कोई भी आपको कभी गाने का मौक़ा नहीं देगा. इसलिए भी छात्र गुरु के ख़िलाफ़ बोलने से डरते हैं."

शक्ति का असंतुलन

शक्ति के इसी स्वरूप पर सवाल उठाते हुए कर्नाटक के संगीतकर और लेखक टी एम कृष्णा कहते हैं, "समर्पण के नाम पर गुरु शिष्य परंपरा को लेकर एक सांस्कृतिक भावना हमारे दिमाग़ों में बैठा दी गयी है. लेकिन थोड़ा गहरे में जाकर सोचें तो हम पाएँगे कि कुछ हिस्से तो हर सम्बंध के अच्छे होते हैं. यहां जो सवाल हम उठा रहे हैं वह यह है कि क्या गुरु-शिष्या परम्परा के ढाँचे के शक्ति समीकरण में कोई संरचनात्मक समस्या है?"

"मुझे लगता है कि इस सिस्टम में एक मूलभूत संरचनात्मक समस्या है कि सीखने के लिए आपको किसी के मातहत रहना होगा. अब यह ज़रूरी नहीं कि किसी के मातहत रहने की वजह से आपके साथ कुछ बुरा हो जाए लेकिन सीखने के लिए मातहत रहना ज़रूरी है, यह एक संरचनात्मक समस्या है. और कहीं-कहीं गुरु शिष्य परम्परा के वर्तमान स्वरूप में हम यही बताने की कोशिश कर रहे हैं कि इस संरचनात्मक समस्या के महिमामंडन से ही आप सीख सकते हैं."

सीना-ब-सीना सीखने का ज़माना

डागर घराने से आने वाले ध्रुपद के एक अन्य वरिष्ठ संगीतकार बहाउद्दीन डागर कहते हैं कि गुरु-शिष्य परम्परा में समस्या तब आती है जब गुरु किसी शिष्य पर नियंत्रण करने की कोशिश करे.

बीबीसी से बातचीत में वह कहते हैं, "यह बहुत अच्छी बात है कि कुछ छात्रों ने इस मामले में अपनी आवाज़ उठाई है. हम उनके साथ हैं. हमें यह समझना चाहिए कि महिलाओं के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदला नहीं है इसलिए किसी के लिए भी इस तरह आकर आवाज़ उठाना आसान नहीं है. लेकिन गुरु शिष्य परम्परा में यह समस्या तब शुरू होती है जब आप अपने गुरु पर सवाल नहीं उठा सकते. हमने भी इसी संस्कार में संगीत सीखा लेकिन हमारी अपने गुरुओं के साथ एकदम सीना-ब-सीना ट्रेनिंग हुई. हम संगीत की बारीकियों को छोड़कर हर बात पर उनसे सवाल जवाब कर सकते थे और ख़ूब करते भी थे".

बहाउद्दीन डागर की ही बात को आगे बढ़ाते हुए टी एम कृष्णा जोड़ते हैं कि यदि किसी परम्परा में हम गुरु को चुनौती नहीं दे सकते तो उस परम्परा में मूलभूत रूप से कुछ समस्या है. "हमें इस पूरी परम्परा के ख़ूबसूरत हिस्सों को अपने पास रखना चाहिए लेकिन उसके लिए पहले इस पूरे सेप्स की परिकल्पना को दोबारा गढ़ना ज़रूरी है. यहां सवाल सिर्फ़ यौन उत्पीड़न का ही नहीं है...बल्कि सिखाने के बदले शिष्यों से किसी भी तरह की अपेक्षा न रखने का भी है."

परिणाम

ज्ञान और अनुभव में सबसे बड़ी प्राप्ति की अवधि किसी व्यक्ति के जीवन में सबसे कठिन अवधि होती है। प्राचीन भारत में गुरु के मार्गदर्शन में व्यावहारिक रूप से जीवन की शिक्षा लेने के लिए गुरुकुल प्रणाली प्रचलित थी। शिष्य गुरुओं के साथ आश्रम में रहते थे और अपने जीवन का प्रमुख विकास काल मजबूत नैतिक मूल्यों, नैतिकता और सहयोग के साथ गुरुकुल में बिताते थे। मानव जीवन की मूल बातें और जीवन जीने की कला गुरुओं द्वारा समानता और अनुशासित प्राकृतिक वातावरण के साथ सिखाई गई थी। गुरुकुल प्रणाली गुरु और शिष्य के बीच आभासी संबंध पर आधारित थी, जो सामान्य छात्र-शिक्षक संबंध से कहीं परे था। गुरु की अनुमति से छात्र अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद अपनी दृष्टि, धारणा और साहस के साथ दुनिया का सामना करने के लिए गुरुकुल छोड़ देते हैं। आधुनिक भारत में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने प्राचीन गुरुकुल प्रणाली की तर्ज पर शांतिनिकेतन में स्कूल शुरू किया। गुरुकुल प्रणाली की उसी विरासत को आगे बढ़ाते हुए, व्यापक और अद्वितीय दृष्टि के साथ, आनंद विश्व गुरुकुल और जूनियर कॉलेज अस्तित्व में आया।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के युग में बुनियादी मूल्य आधारित शिक्षा धीरे-धीरे कम होती जा रही है और नैतिकता, नैतिकता, सम्मान, धैर्य, ईमानदारी जैसे व्यक्ति के गुण किताबी शब्द बन गए हैं। अलग सोच रखने वाले उत्साही, ऊर्जावान युवाओं की सख्त जरूरत है और उनमें स्नेह, जुनून, देशभक्ति जैसे गुण पैदा किए जाने चाहिए। आनंद विश्व गुरुकुल एक ऐसी संस्था है जिसकी विचारधारा छात्रों के समग्र विकास के लिए बनाई गई है। सम्मान, जिम्मेदारी, मजबूत कार्य नैतिकता और नैतिक मानवीय मूल्य संस्था के स्तंभ हैं। शिक्षा स्वयं के संपूर्ण उपयोग का ज्ञान है। शिक्षा विफल हो जाती है यदि स्कूल का दायरा अंततः जीने की तैयारी, समझ और एक बेहतर दुनिया के निर्माण में शामिल समस्याओं में भागीदारी की तैयारी नहीं कराता है।

हमारा दूरदर्शी और अत्यधिक सहायक प्रबंधन उत्तम शिक्षा के लिए सभी आधुनिक सुविधाएं प्रदान करके कर्मचारियों और छात्रों को प्रोत्साहित करता है। प्रत्येक कक्षा अपनी विशेष कक्षा की आवश्यकताओं के अनुसार डिजिटल बोर्ड और सॉफ्टवेयर से सुसज्जित है। विशाल पुस्तकालय और सभागार छात्रों को अपनी प्रतिभा और सीखने की क्षमताओं को सामने लाने के लिए पर्याप्त गुंजाइश और अवसर प्रदान करते हैं। संगीत (मुखर और वाद्य), नृत्य (लोक, पश्चिमी, शास्त्रीय), कला और शिल्प जैसी पाठ्येतर गतिविधियाँ छात्रों को उनके व्यक्तित्व को बढ़ाने और रचनात्मकता को लागू करने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए हैं, जो उनके मोटर कौशल विकास में मदद करती हैं। संज्ञानात्मक विकास को प्रमुख उद्देश्य के रूप में रखते हुए, स्कूल सही तर्क, अवधारणा निर्माण और समस्या सुलझाने की क्षमता को बढ़ाने के लिए अबेकस, शतरंज गतिविधियाँ प्रदान करता है।

युवाओं की वैज्ञानिक सोच और व्यावहारिक दृष्टिकोण से सीखने की क्षमता को विकसित करने के लिए स्कूल में अलग-अलग प्रयोगशालाएँ (भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान, आईटी और कंप्यूटर विज्ञान) हैं। शारीरिक विकास प्रमुख उद्देश्यों में से एक है और शारीरिक स्वास्थ्य की आवश्यकता को पूरा करने के लिए, स्कूल में तायक्वोंडो, किकबॉक्सिंग, कराटे और एथलेटिक्स जैसी कई खेल गतिविधियाँ की जाती हैं। स्कूल ने छात्रों को अनुशासन और दृढ़ संकल्प के महत्व को सीखने के लिए सेना प्रशिक्षण भी शुरू किया था। कैंटीन की सुविधा उपलब्ध है जो नन्हे-मुन्नों की स्वाद कलिकाओं को संतुष्ट करने के लिए पौष्टिक, संतुलित आहार भोजन परोसती है। बच्चों के भावनात्मक स्वास्थ्य का ख्याल रखने और माता-पिता और शिक्षकों की मदद के लिए हमारे पास पूर्णकालिक परामर्शदाता हैं।

जूनियर कॉलेज, जिसमें विज्ञान, वाणिज्य और कला स्ट्रीम के साथ कंप्यूटर विज्ञान (विज्ञान स्ट्रीम), बैंकिंग और कार्यालय प्रबंधन (वाणिज्य स्ट्रीम) जैसे द्विफोकल विषय हैं, महाराष्ट्र राज्य उच्चतर माध्यमिक बोर्ड से संबद्ध हैं। स्कूल और कॉलेज के छात्रों ने तायक्वोंडो, किक बॉक्सिंग, कराटे, तीरंदाजी, तैराकी, एशटेडो, जिमनास्टिक, शिकाई मार्शल आर्ट और तलवारबाजी के लिए जिला और राज्य स्तर पर स्वर्ण पदक जीते हैं। FYJC के एक छात्र ने किक बॉक्सिंग चैंपियनशिप 2018-19 में राष्ट्रीय स्तर पर कांस्य पदक जीता।

छात्रों की बढ़ती संख्या के साथ, हम विकासशील शैक्षणिक संस्कृति में सभी अभिभावकों की भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं। यह सर्वविदित है कि "महान लोग असाधारण दृढ़ संकल्प वाले साधारण लोग होते हैं।" छात्रों को अपने सपनों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, भले ही आगे का रास्ता कठिन क्यों न हो। हमारा सपना है कि हम अपने गुरुकुल को एक ऐसा स्थान बनाएं, जहाँ हर छात्र सकारात्मक वातावरण में उच्च आत्मसम्मान, आत्मसम्मान, महान गौरव और जीवन के प्रारंभिक वर्षों का व्यापक अनुभव प्राप्त कर सके। हम बच्चों को उनके सपनों को प्राप्त करने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने, संसाधन और केंद्रित नेतृत्व प्रदान करने का संकल्प लेते हैं।

निष्कर्ष

प्राचीनकाल में जब अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विश्व के अन्य भू-भागों के निवासी असभ्य तथा जंगली जीवन व्यतीत कर रहे थे, तब भारत वर्ष में एक ऐसी शिक्षा पद्धति का जन्म हो गया था जो व्यक्ति के सांस्कृतिक के उत्थान के लिए अनिवार्य समझी जाती है।

भारत के सुदूर अतीत में जिस शिक्षण पद्धति का आविर्भाव हुआ था, उसे हम वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति के नाम से जानते हैं क्योंकि इसके अन्तर्गत हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति के मूलाधार वेद यथा- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद थे। वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति का समय ऋग्वेद के रचनाकाल (लगभग 25000 ई0पू0) से लेकर बौद्ध धर्म के उदय लगभग (500 ई0पू0) तक है।

वैदिक कालीन संगीत शिक्षण प्रणाली- शिक्षा ग्रन्थों में ऐसे संकेत निहित हैं जिनसे ज्ञात होता है कि आरम्भिक युग में वैदिक शाखा, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, सूत्र आदि विषयों का अध्ययन अध्यापन उन विद्यालयों में होता था जिन्हें प्राचीन साहित्य में चरण कहते थे। साधारण रूप से वैदिक साहित्य में संगीत प्रशिक्षण के तीन रूप प्रचलित होने का संकेत मिलता है। 1.पिता-पुत्र रूप में, 2.गुरू-शिष्य परम्परा के रूप में तथा 3.गुरूकुल भेजकर शिक्षा ग्रहण करना। वैदिक काल में 12 वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करने वाले को स्नातक 24 वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करने वाले को 'वसु' 36 वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करने वाले को 'रुद्र' 48 वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति को 'आदित्य' कहा जाता था। शिक्षा सत्र श्रावण मास की पूर्णिमा से लेकर पौष मास की पूर्णिमा तक चलता था।

मध्यकालीन संगीत शिक्षण प्रणाली - इस समय जनसाधारण के लिए किसी प्रकार की संगीत शालाओं अथवा विद्यालय की व्यवस्था राज्य की ओर से नहीं पायी गई। इससे स्पष्ट होता है कि संगीत शिक्षण संगीतज्ञ संगीतकारों आदि से व्यक्तिगत रूप से ही ग्रहण किया जाता था। ये कलाकार संगीत कला की शिक्षा ग्रहण करने का एकमात्र साधन होने के कारण अपने अथवा अपनी संतान व कुछ प्रमुख शिष्यों तक ही सीमित रखना चाहते थे। परन्तु संगीतकारों की ऐसी विचारधारा होने पर भी रियासती शासकों में संगीत के प्रति श्रद्धा भाव के परिणामस्वरूप संगीत रूपी दीप शिक्षा प्रज्ज्वलित होती रही।

आधुनिक संगीत शिक्षण प्रणाली- भारत में संगीत की शिक्षा-प्रणाली प्रमुख रूप से दो प्रकार की रही है। एक व्यक्तिगत पद्धति जिसे गुरूकुल पद्धति के रूप में जाना जाता है और दूसरी संस्थागत संगीत शिक्षण। जिसका आरम्भ 19वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में और विकास 20वीं शताब्दी के आरम्भ से हुआ। कलकत्ता में सुरेन्द्र मोहन टैगोर द्वारा, बड़ौदा में मौला बख्श के द्वारा संगीत शिक्षा के प्रयास आरम्भ हुए। 1901 में पंडित विष्णु दिगंबर जी का महाविद्यालय लाहौर में स्थापित हुआ और बाद में बंबई और दूसरे स्थानों में बढ़ा। संगीतकारों को यह आवश्यकता महसूस हुई कि संगीत को सँवारने प्रतिष्ठा दिलाने के लिए उसका शिक्षण भी वैसे ही हो जैसे अन्य विषयों का शिक्षण हो रहा है। जैसे कि बेदी जी ने कहा कि यह सोचा गया कि संस्था में ही संगीत-शिक्षण हो और इसके लिए संगीत पर पाठ्य पुस्तकां और पाठ्यक्रम का होना जरूरी था। इस उद्देश्य से मौला बख्श जी ने, पंडित विष्णु दिगंबर जी ने पुस्तकें लिखी। भारतेंदु जी इत्यादि ने पाठ्यक्रम बनाया लेकिन संगीत-शिक्षण के लिए पहले तो पुस्तकों की संख्या ही बहुत कम है और दूसरे अगर पुस्तक है भी और कितनी भी बड़ी हो, वह पुस्तक भी संगीत-शिक्षण में शायद 2 प्रतिशत काम करती है। 98 प्रतिशत संगीत का शिक्षण आज भी वाचिक परंपरा जिसको अंग्रेजी में ओरल ट्रेडीशन कहते हैं, के द्वारा होता है। भारतीय संगीत खास तौर से गुरु मुख जिसको ओरल ट्रांसमीशन कहा जाता है को महत्व देता है। गुरु से शिष्य उससे पुनः शिष्य उससे पुनः तो ओरल ट्रांसमीशन परंपरा के माध्यम से आज भी जीवित रह रहा है।

वास्तविकता यह है कि पाठ्य पुस्तक पूरा संगीत नहीं सिखा सकते। यह स्मृति के लिए एक ढाँचे को खड़ा कर देगा। उसकी पूर्ति करना है, उसमे जो भराव लाना है वह तो गुरूमुख से ही सीखना होगा। कुछ आलाप बाँधकर प्रकाशित करने की कोशिश शुरू की गयी। विष्णु दिगंबर जी ने कम से कम पूरे 5 रागों में 3 गायकी लिखने की कोशिश की। नोटेशन का सहारा तो 19वीं सदी के उपरांत से शुरू हुआ और 20वीं सदी में उसमें प्रगति हुई। आज तक लोग बना रहे हैं।

संस्थागत संगीत शिक्षण की एक सीमा है। इंस्टिट्यूशन्स शुरू-शुरू में यही समझते थे कि जो काम गुरू मुख से होता था वह संस्था में भी हो सकेगा। लेकिन यह सहज नहीं है क्योंकि संस्था में समय की सीमा बहुत है। पहले गांधर्व महाविद्यालय थे। जो शाम-शाम को चलते थे। लोग दिन भर दूसरे काम करते और शाम को आ जाया करते थे। रोज आ जाये तो बहुत अच्छा नही तो हफ्ते में दो दिन, 4 दिन या जिसे जो भी समय मिला उसमें आता था। लेकिन शिष्य परम्परा को तैयार कराना लक्ष्य हो तो इस तरह केवल शाम को सीखना शिष्य-परम्परा नहीं है।

लेकिन कहा ला सकता है कि गुरु शिष्य परम्परा एवं संस्थागत शिक्षण दो पद्धतियों ने ही संगीत शिक्षण को जीवित रखा है।

संदर्भ

[1] प्रसाद, कालिका (2000). बृहत हिन्दी कोश. वाराणसी भारत: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ° 147. पाठ "editor: राजबल्लभ सहाय, मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव" की उपेक्षा की गयी (मदद); |access-date= दिए जाने पर |url= भी दिया जाना चाहिए (मदद)

[2] "महामना का स्वप्न". अभ्युदय.कॉम. पाठ "http://www.abhyuday.org/xprajna/html/bhanu_shankar.php" की उपेक्षा की गयी (मदद); |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद); गायब अथवा खाली |url= (मदद); |access-date= दिए जाने पर |url= भी दिया जाना चाहिए (मदद)

[3] एक अनमोल विरासत का नाम है गुरुकुल झज्जर

[4] निबन्ध संगीत, लक्ष्मी नारायण गर्ग, संगीत कार्यलय हाथरस, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या 123

[5] संगीत रत्नाकर, भाग दाे पृष्ठ संख्या 8

[6] "Home". CraftedTracks (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2018-12-02.

[7] संगीत सम्बन्धी विविध लेख (संगीत गैलेक्सी)

[8] भरत का नाट्यशास्त्र और अन्य संगीत ग्रंथ

[9] संगीत शास्त्र का परिचय (तनरंग)

[10] भारतीय संगीत की जानकारी

[11] भारतीय संगीत में स्त्रियों का योगदान

[12] असीमित हिन्दी संगीत

[13] India Radio

[14] ओमनाद पर संगीत चर्चा

[15] भारतीय संगीत वाद्य: सितार

[16] A Glossary of Indian Music Terms

[17] OVERVIEW OF INDIAN CLASSICAL MUSIC

[18] संस्कृति और परम्परा का वैभव है भारतीय संगीत (महामेडिया)

International Journal of Trend in Scientific Research and Development
IJTSRD
International Journal of Trend in Scientific Research and Development
ISSN: 2456-6470